

लक्ष्मीसूक्त-पुरुषसूक्तसमन्वितम्

श्रीसूक्तम्

प्राप्ति स्थान

शिव संस्कृत संस्थान वाराणसी

संस्कृतसेवाधर्मग्रन्थमाला

११

श्रीसूक्तम्

सान्वय-हिन्दीटीका-सहितम्

(महालक्ष्मीध्यान-न्यास-पूजन-यन्त्र-श्रीसूक्त-पुरश्चरणविधि-लक्ष्मीसूक्त-पुरुषसूक्तसमन्वितम्)

हिन्दीव्याख्याकारः

आचार्यपण्डितशिवदत्तमिश्रशास्त्री

सम्पादकः

ओमप्रकाशमिश्रशास्त्री

शिव संस्कृत संस्थान, वाराणसी

प्रकाशक :

शिव संस्कृत संस्थान

(प्राचीन भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के प्रकाशक तथा वितरक)

दौलतपुर (पाण्डेयपुर), वाराणसी

अन्य प्राप्ति स्थान :

विश्वभारती संस्कृत संस्थान

(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, पूर्वी गेट के सामने)

जगतगंज, वाराणसी– २२१००२

परिवर्धित संस्करण

अक्षर सज्जा

मुद्रक : कुसुम ऑफसेट, कतुआपुरा, वाराणसी, ४३२२६५ -

ॐ तत्सत्

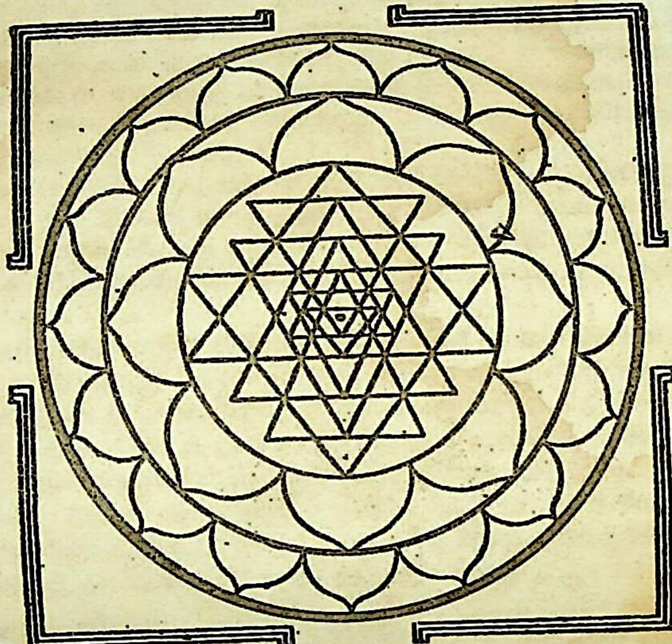
ॐ श्री सद्गुरुचरणकमलेभ्योनमः । ॐ श्री गं गणपतये नमः । ॐ ॐ ॐ माँ क्रीं ।

मानवीय जीवन के सफलताओं में अर्थ (धन) की नितान्त आवश्यकता है । अर्थ के अभाव में प्राणी अपने को असहाय एवं भारस्वरुप महसूस करता है । अर्थ प्राप्ति के वैदिक एवं तान्त्रिक साहित्य में असंख्य प्रयोग दिये गये है जिनके माध्यम से अर्थ प्राप्ति के श्रोतो की प्राप्ति सम्भव है । किसी भी प्रयोगों एवं मन्त्र से सम्बन्धित देवता के प्रति जब तक पूर्ण आस्था एवं पूर्ण समर्पण भाव नही होगा तब तक पूर्ण फल की प्राप्ति सम्भव नहीं है । अर्थ प्राप्ति के लिए ऋग्वेदोक्त श्रीसूक्त स्वयं सिद्ध है । यों तो श्री सूक्त के असंख्य प्रयोग तन्त्रशास्त्र में भरे पड़े है, आवश्यकता है उसे पूर्ण निष्ठा से करने की । वर्तमान भौतिकवादी युग में अर्थ की प्रधानता सर्वोपरि मानी जा रही है । मन्त्रों एवं सूक्तों के प्रति आज के समाज में आस्था तो अवश्य है पर उसके प्रति पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव की कमी है । इसी कमी के कारण से प्रयोगो का लाभ नही मिल पाता । जिसके कारण अनास्था जागृत होती है इसी अनास्था के फलस्वरुप लोग कहते हैं कि सारे मन्त्र एवं सूक्त व्यर्थ है ।

परमसाधक श्रद्धेयश्रीरघुनाथजीदूबे एवं पुज्य गुरुवर श्रीरामसरस्वती जी से प्राप्त श्रीसूक्त के अनुभूत प्रयोग पाठकों के लाभार्थ इस छोटी सी पुस्तक में उद्धृत किया गया है जो अचूक हैं, इसमें सन्देह नही । वैसे तो श्रीसूक्त एक ओर वैदिक साहित्य के उपमा शास्त्र का प्राण है तो दूसरी तरफ आयुर्वेद एवं रसायन का छिपा हुआ खजाना भी । कहा जाता है कि श्रीसूक्त के १६ श्लोको में स्वर्ण बनाने की अचूक विधि सन्निहित है । विश्व का कोई भी साहित्य इसकी बराबरी नही कर सकता यह निर्विवाद रुप से सत्य है ।

प्रस्तुत संस्करण श्रीविद्या-प्रेमी उपासकों की भावना को दृष्टिगत करते हुए प्रकाशित करने की उत्कण्ठा हुयी । इसके मुद्रण, छपाई कागज आदि पर विशेष रुप से ध्यान दिया गया है । गुरुकृपा एवं सन्तसमागम ही ग्रन्थ की उपलब्धता का परिचायक हैं । निकट भविष्य में श्रीसूक्त के अन्य अनुभूत प्रयोग एवं श्रीसूक्त के प्रत्येक ऋचाओं का न्यास सहित अलग-अलग प्रयोग विधि भी देने का प्रयास करेंगे जिससे साधक (उपासक वर्ग) अधिक से अधिक लाभान्वित हो सकें । श्री विद्या प्रेमी उपासक इससे लाभान्वित हों यही माँ गुरु से प्रार्थना है, साथ ही साधकजनों से अनुरोध है कि गुरु अथवा अधिकारी से ही दिशा निर्देश प्राप्त कर ही प्रयोग करें ।

–ओमप्रकाश मिश्र



लक्ष्मीपूजनसामग्री

रोली	सिन्दूर	दुग्ध	गणेशजी की मूर्ति
मौली (कलावा)	रूई	दही	सिंहासन
धूपबत्ती	पान १०	घृत	वस्त्र (लक्ष्मीजी के लिए)
कपूर	सुपारी २०	चीनी	वस्त्र (गणेश जी के लिए)
केसर	फूल–माला	शहद	धान का लावा
चन्दन	दूर्वा	इलायची (छोटी)	कलश (ताँबा अथवा मिट्टी)
चावल	इत्र	पञ्चपल्लव	कपड़ा सफेद ॥ मीटर
यज्ञोपवीत	लवङ्ग	सर्वौषधि	कपड़ा लाल ॥ मीटर
अबीर (गुलाल)	पेड़ा	गरी का गोला २	गङ्गाजल
बुक्का (अभ्रक)	ऋतुफल	लक्ष्मी जी की मूर्ति	

लक्ष्मीहवनसामग्री

गो घृत	सफेद चन्दन धुरा	अगर	तगर
इन्द्र जव	खस	मधु	पाकड़
बेलपत्र	छड़िला	कमलगट्टा	जटामासी

श्रीसूक्त न्यास-विधिः

'हिरण्यवर्णाम्' इत्यादि पञ्चदश ऋचाओं वाले श्रीसूक्त के इन्दिरा, आनन्द, कर्दम और चिक्लीत ऋषि हैं। श्री अर्थात् इन्दिरा प्रथम मन्त्र के ऋषि हैं तथा आनन्द, कर्दम और चिक्लीत शेप चतुर्दश मन्त्रों के द्रष्टा हैं। ये तीनों इन्दिरा (लक्ष्मी) के पुत्र हैं। 'हिरण्यवर्णाम्' आदि प्रथम तीन ऋचाचों का अनुष्टुप् छन्द है, 'कां सोस्मि' इस ऋचा का बृहती छन्द है, उसके आगे की दो ऋचाओं का त्रिष्टुप् छन्द है, उससे अगले आठ मन्त्रों का अनुष्टप् छन्द है। शेष मन्त्रों का प्रस्तारपङ्क्ति छन्द है। श्री और अग्नि इन ऋचाओं के देवता हैं, 'हिरण्यवर्णाम्' यह बीज है, 'कां सोस्मि' यह शक्ति है। हिरण्मयी, चन्द्रा, रजतस्त्रजा, हिरण्यस्त्रजा, हिरण्या, हिरण्यवर्णा- इन नामों को चतुर्थी विभक्ति में रखकर आदि में प्रणव और अन्त में नमः बोल कर अङ्गन्यास करे। जैसे - *ॐ हिरण्यमय्यै नमः, हृदयाय नमः। ॐ चन्द्रायै नमः, शिरसे स्वाहा। ॐ रजतस्त्रजायै नमः, शिखायै वषट्। ॐ हिरण्यस्त्रजायै नमः, कवचाय हुम्। ॐ हिरण्यायै नमः, नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हिरण्यवर्णायै नमः, अस्त्राय फट्।* तत्पश्चात् श्री सूक्त के मन्त्रों से इस प्रकार अङ्गन्यास करे-

विनियोगः- हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द-कर्दम-चिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः, आद्यानां तिसृणामनुष्टुप्छन्दः चतुर्थ्याः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, पञ्चमी-षष्ठयोस्त्रिष्टुप्छन्दः, ततोऽष्टानामनष्टुप्छन्दः, अन्त्यायाः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, न्यासे पाठे (हवने) च विनियोगः।

अङ्गन्यासः- ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥ *वामकरे।*

ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ *दक्षिणकरे ।*

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ *वामपादे ।*

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ *दक्षिणपादे ।*

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनीमीं शरणं प्रपद्ये ऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ *वामजानौ ।*

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ *दक्षिणजानौ ।*

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ *वामकट्याम् ।*

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ *दक्षिणकट्याम् ।*

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ *नाभौ ।*

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ *वामबाहौ ।*

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं च मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ *दक्षिणबाहौ ।*

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥ *कण्ठे ।*

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥ *मुखे ।*

ॐ तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥ *नेत्रयोः ।*

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ *मूर्ध्नि ।*

पुनः षडङ्गन्यासः - ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ *हृदयायनमः ।*

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं च मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ *शिरसे स्वाहा ।*

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥ *शिखायै वषट् ।*

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥ *कवचाय हुम् ।*

ॐ तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥ *नेत्रत्रयाय वौषट् ।*

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ *अस्त्राय फट् ।*

ध्यानम् - या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्त्तनाभिस्तनभारनमिता शुभ्रवंस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भै-
र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥ १॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा करकमलधृतेष्टा-भीतियुग्माम्बुजा च ।
मणिमुकुटविचित्राऽलङ्कृताऽऽकल्पजालैः सकलभुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥२॥

इति श्री श्री सूक्त न्यास विधिः

○

लक्ष्मीपूजन-विधिः

साधक को चाहिए कि वह कुशासन पर पूर्व की ओर बैठ आचमन, प्राणायाम कर, दाहिने हाथ में जल एवं पुष्प लेकर संकल्प करे ।

सङ्कल्पः- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये प्रहरार्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुकनाम्नि क्षेत्रे श्रीसूर्ये अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नः (वर्मा, गुप्तः, दासः) अमुकशर्मा सपत्नीकोऽहम् आत्मनः श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफल-प्राप्त्यर्थं कायिकादित्रिविधताप-पापोपशमनार्थमायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीमहालक्ष्मीदेवताप्रीत्यर्थं यथोपचारैः महालक्ष्मी पूजनमहं करिष्ये ।

इसप्रकार संकल्प-वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे । तदनन्तर हाथ में लाल पुष्प लेकर, निम्नाङ्कित श्लोक पढ़कर भगवती महालक्ष्मी का ध्यान करे ।

ध्यानम् - या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्त्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भै-
र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥ १॥
अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा करकमलधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च ।
मणिमुकुटविचित्राऽलङ्कृताऽऽकल्पजालैः सकलभुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥२॥

आवाहनम् - (इस मन्त्र से लक्ष्मीजी का आवाहन करे ।)

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥

आसनम् - (इस मन्त्र से लक्ष्मीजी के लिए आसन प्रदान करे ।)

ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥

पाद्यम् - (इस मन्त्र से लक्ष्मीजी के चरणों में पाद्य (जल) देवें ।)

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् । श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥

अर्घ्यम् - (इस मन्त्र से लक्ष्मीजी के लिए अर्घ्य प्रदान करे ।)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥

आचमनीयम् - (इस मन्त्र से लक्ष्मीजी को आचमन प्रदान करे ।)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तांपद्मनीमीं शरणं प्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वांवृणे ॥

पञ्चामृतस्नानम् - (इस मन्त्र से लक्ष्मीजी को पंचामृत से स्नान कराये ।)

ॐ पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु । शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

शुद्धोदकस्नानम् - (इस मन्त्र को पढ़कर, शुद्ध जल से लक्ष्मीजी को स्नान कराये ।)

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्यफलानि तपसा नुदन्तुमायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥

ततः पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पश्चादभिषेकः कार्यः ।

वस्त्रम् - (इस मन्त्र से साड़ी, पीताम्बर, आदि वस्त्र चढ़ावे ।)

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥

उपवस्त्रम् (कञ्चुक्यादि)- (इस मन्त्र से लक्ष्मीजी को उपवस्त्र आदि चढाये ।)

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥

गन्धम् - (इस मन्त्र से केशरिया चन्दन देवी को लगावे ।)

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

अक्षतान् - (इस मन्त्र से अक्षत चढावे ।)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥

पुष्पम् - (इस मन्त्र से पुष्प और पुष्पमाला चढ़ावे ।)

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥

धूपम् - (इस मन्त्र से धूप जलावे ।)

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥

दीपम् - (इस मन्त्र से घी का दीप जलावे ।)

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥

नैवेद्यं फलं च - (इस मन्त्र से नैवेद्य एवं फल का भोग लगावे ।)

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥

ताम्बूलम् - (इस मन्त्र से पान का बीड़ा समर्पित करे ।)

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥

दक्षिणाद्रव्यम् - (इस मन्त्र से दक्षिणा द्रव्य चढावे ।)

ॐ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

नीराजनम् - (इस मन्त्र से नीराजन (आरती) करे ।)

ॐ तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

प्रदक्षिणाम् - (इस मन्त्र से महालक्ष्मी की प्रदक्षिणा करे ।)

ॐ तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

नमस्कारः - (इस मन्त्र से लक्ष्मी को साष्टाङ्ग प्रणाम करे ।)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् । सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

क्षमा-प्रार्थना- (निम्नाङ्कित श्लोक पढ़कर लक्ष्मी जी से क्षमा-प्रार्थना करे ।)

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद् देव्याः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति वन्दनाच्च सुरेश्वरीम् ॥

इति श्री लक्ष्मी पूजनविधिः ।

ऋग्विधानोक्त-श्री सूक्तस्य पुरश्चरण विधिः (१)

य इच्छेद्वरदां देवीं श्रियं नित्यं कुले स्थितम् । स शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ १॥
श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् । आवाहयेच्छिवं पद्मे पञ्चभिः कनकेऽपि वा ॥ २॥
उपहारानुपरमेच्छुक्लान् भक्ष्यान् पयो दधौ । स्थालीपाकं च शालीनां पयसा सम्प्रकल्पयेत् ॥ ३॥
चान्द्रायणविवाप्मा तु प्रपद्येत् प्रयतः श्रियै । सर्वौषधीभिः पाठाभिः स्नात्वाऽद्भिः पावनैरपि ॥ ४॥
उपैतु मां देवसखः इति राज्ञोऽभिषेचनी । मनसः काममित्येषा पशुकामाभिषेचनी ॥ ५॥
कर्दमेनेति यः स्नायात् प्रजाकामः शुचिव्रतः । अश्वपूर्णामिति स्नायाद्राज्यकामः शुचिव्रतः ॥ ६॥
रोहिते चर्मणि स्नायाद् ब्राह्मणस्तु यथाविधिः । राजा चर्मणि वैयाघ्रे क्षत्रियस्त्वथ रौरवे ॥ ७॥
वस्तचर्मणि वैश्यस्तु होमः कार्यस्त्वनन्तरम् । चन्द्रामिति तु पद्मानि जुहुयात् सर्पिषा द्विजः ॥ ८॥
आदित्यवर्णेत्यनया बिल्वहोमो विधीयते । बिल्वोत्थएववाऽग्निः स्यात्स्थालीपाकं हुनेद् द्विजः ॥ ९॥
दशसाहस्त्रिको होमः श्रीकामः प्रथमो विधिः । हुत्वा तु प्रयतुं सम्यगनन्तां विन्दते श्रियम् ॥१०॥
अयुतं शतकृत्वस्तु हुत्वा शुक्लानि सर्पिषा । अनन्तामव्यवच्छिन्नो शाश्वतीं विन्दते श्रियम् ॥११॥
अशक्तौ जप एवोक्तो दशसाहस्त्रिको वरः । जप्त्वा तु प्रयुतं सम्यगनन्तां विन्दते श्रियम् ॥१२॥
अयुतं शतकृत्वस्तु जप्त्वा श्रियमुपाश्नुते । अप्स्वेव जुहुयान्नित्यं पद्मान्ययुतशो निशि ॥१३॥
दृष्टवा श्रियं चोपरमेत् किलासत्वाद्विधेन वै । बिल्वाशी बिल्वनिलयो जुहुयाद्बिल्वानि सर्पिषा ॥१४॥
एकविंशतिरात्रेण परो सिद्धिं नियच्छति । येन येन च कामेन जुहोति प्रयतः श्रियै ॥१५॥
पद्मान्यथावि बिल्वानि सन्स कामः समृध्यति ।

इति ऋग्विधानोक्त-श्रीसूक्तस्यपुरश्चरणविधिः

विष्णुधर्मोत्तरोक्त-श्रीसूक्तस्यपुरश्चरणविधिः (२)

पुष्कर उवाच-

हिरण्यवर्णा हरिणीमृचः पञ्चदश द्विजः । श्रीसूक्तं कथितं पुण्यमृग्वेदे पुष्टिवर्धनम् ॥१॥
रथे अश्वेषु वाजेति चतस्रस्तु तथा ऋचः । श्रीसूक्तं तु यजुर्वेदे कथितं पुष्टिवर्धनम् ॥२॥
श्रीर्यस्तीयं तथा साम सामवेदे प्रकीर्तितम् । श्रियं दातुर्मयि देहि प्रोक्तमाथर्वणे तथा ॥३॥
श्रीसूक्तं तु जपेद्भक्त्या तस्याऽलक्ष्मीर्विनश्यति । जुहुयाद्यश्च धर्मज्ञो हविष्येण विशेषतः ॥४॥
श्रीसूक्तेन तु पद्मानां घृताक्तानां नृपोत्तम । अयुतं होमयेद्यस्तु वह्नौ भक्तियुतो नरः ॥५॥
पद्महस्तद्वया लक्ष्मीर्नरं तमुपतिष्ठति । दशायुतं पद्मानां जुहुयाद्यस्तथा जले ॥६॥
नापैति तत्कुलाल्लक्ष्मीर्विष्णोर्वक्षो गता यथा । घृताक्तानां तु बिल्वानां हुत्वा रामायुतं तथा ॥७॥
बहुवित्तमवाप्नोति स यावन्मनसेच्छति । बिल्वानां लक्षहोमेन कुले लक्ष्मीमुपाश्नुते ॥८॥
पद्मानामथ बिल्वानां कोटिहोमं समाचरेत् । श्रद्धधानः समाप्नोति देवेन्द्रत्वमपि ध्रुवम् ॥९॥
सम्पूज्यदेवीं वरदांयथावत्, पद्मैः सितैर्वा कुसुमैस्तथाऽन्यैः ।
क्षीरेणधूपैः परमान्नभक्ष्यैर्लक्ष्मीमवाप्नोति विधानतश्च ॥१०॥

इति विष्णुधर्मोत्तरोक्त-श्रीसूक्तस्यपुरश्चरणविधिः ।

०

श्रीसूक्तस्य पुरश्चरणविधिः (३)

परिषिञ्चेत् त्रिंशो नित्यं सूक्तैस्तैः स्नानकर्मणि । आदित्याभिमुखो जप्याद्यावत् तावच्च तर्पयेत् ॥१॥

शुक्लाद्यां तिथिमारभ्य यावदेकादशी भवेत् । तावद् द्वादशसाहस्त्रं जपेन्निश्चलमानसः ॥२॥

ब्रह्मचर्यरतः शुद्धवस्त्रदन्तादिका सुधीः । पद्मैस्त्रिमधुरोपेतैर्घृताक्तैन पयोऽन्धसा ॥३॥

श्री समिद्भिः सर्पिषा च प्रत्येकं त्रिशतं हुनेत् । द्वादश्यां द्वादशैर्वाथ सद्विप्रांश्चापि भोजयेत् ॥४॥

तेन सिद्धो भवेन्मन्त्रो नाऽत्र कार्या विचारणा । कुन्द - मन्दार - कुमुद - मालती-पद्म-केतकम् ॥५॥

नन्द्यावर्त्ताह्वयं जातो कल्हारं चम्पकं तथा । रक्तोत्पलादिपुष्पाणि लक्ष्म्याश्चातिप्रियाणि हि ॥६॥

त्रिवारमन्वह मन्त्रो जुहुयाच्च यथाविधिः । षण्मासं यः करोत्येवं स स्याल्लक्ष्मीपतिः स्वयम् ॥७॥

इति श्रीसूक्तस्यपुरश्चरणविधिः समाप्तः ।

O

श्री सूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥१॥

ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥४॥

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमीं शरणं प्रपद्ये ऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या ऽअलक्ष्मीः॥६॥

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥८॥

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरींꣳ सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥९॥

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचꣳ सत्यमशीमहि।
पशूनांꣳ रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशꣳ॥१०॥

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥१३॥

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥१४॥

ॐ तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

इति श्री श्रीसूक्तम् ।

श्री सूक्तम्

सान्वय-हिन्दीटीकां-सहितम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१।।

अन्वयः- हे जातवेदः, (त्वम्) हिरण्यवर्णाम्, हरिणीम्, सुवर्णरजतस्रजाम्, चन्द्राम्, हिरण्मयीम्, लक्ष्मीम्, मे आवह ।

भाषार्थः- हे जातवेदा अग्रे ! आप बीते हुए समस्त वृत्तान्तों को जानने वाले तथा बतलाने वाले हो । अतः सुवर्णसदृश पीत वर्णवाली तथा किञ्चित् हरितवर्णवाली अथवा **"श्रीर्धृत्वा हरिणा रूपमरण्ये सञ्चार ह"** इस देवीपुराण के वचनानुसार हरिणी रूपधारिणी सुवर्णमिश्रित चाँदी की माला धारण करनेवाली, सुन्दरवर्णवाले चाँदी के समान श्वेतपुष्पों की माला धारण करने वाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशमान, चन्द्रमा की तरह सबको प्रसन्न करनेवाली, चञ्चला, हिरण्यमयी रूपवाली, एवं हिरण्यमय ही जिसका शरीर है ऐसी सुवर्णमयी लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ ।।१।।

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।।२।।

अन्वयः- हे जातवेदः! ताम् अनपगामिनीम्, लक्ष्मीम् मे, आवह, यस्याम्, हिरण्यम्, गाम, अश्वम्, पुरुषान्, अहम्, विन्देयम् ।

भाषार्थः- हे जातवेदा अग्निदेव ! आप उन जगद्विख्यात एवं अनपगामिनी अर्थात् मुझको छोड़कर अन्यत्र न

जानेवाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ । जिनके आगमन से मैं सुवर्ण, गौ, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ ॥२॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥

अन्वयः- अश्वपूर्वाम्, रथमध्याम्, हस्तिनादप्रबोधिनीम्, देवीम्, श्रियम्, उपह्वये, देवी, श्रीः, मा, जुषताम् ।

भावार्थः- जिन देवी के आगे घोड़े और बीच में रथ है, अथवा जिनके आगे घोड़े जुटे हुए हैं ऐसे रथ में सवार, हाथियों के निनाद से जगत् को आनन्दित करनेवाली, दीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देने वाली लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ । दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता वह लक्ष्मी मेरे घर में सर्वदा निवास करें ॥३॥

काँसोऽस्मि तां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥४॥

अन्वयः- काम, सोस्मिताम्, हिरण्यप्राकाराम्, आर्द्राम्, ज्वलन्तीम्, तृप्ताम्, तर्पयन्तीम्, पद्मे स्थिताम्, पद्मवर्णाम् ताम् श्रियम् (लक्ष्मीम्) इहं उपह्वये ।

भावार्थः- जिनका स्वरूप, वाणी और मनका विषय न होने के कारण अवर्णनीय हैं तथा जो मन्दहास्ययुक्ता हैं, जो चारों ओर सुवर्ण से वेष्टित हैं एवं दयार्द्र हृदयवाली या समुद्र से उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीरवाली होती हुई भी दीप्यमान हैं । (यहाँ विरोधाभास अलंङ्कार प्रतीत होता है । विरोध यह है कि, जो पदार्थ आर्द्र होता है वह जल नहीं हो सकता । अतः इसका परिहार यह है कि लक्ष्मी जी दया से आर्द्र होने पर भी तेज से देदीप्यमान हैं ।) स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नानाविध मनोरथों को पूर्ण करनेवाली, कमल के ऊपर विराजमान तथा कमलसदृश गृह में निवास करनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ ॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनीमीं शरणं प्रपद्ये ऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥

अन्वयः- चन्द्राम्, प्रभासाम्, यशसा, ज्वलन्तीम् लोके, देवजुष्टाम्, उदाराम्, पद्मनीमिम्, ताम्, श्रियम्, शरणम्, प्रपद्ये, मे, अलक्ष्मीः, नश्यताम्, त्वाम् वृणे ।

भावार्थः- चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, प्रकृष्ट कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्ग लोक में इन्द्रादि देवताओं से सेवित, अतिदानशीला, कमल के मध्य में रहने वाली, रक्षा करने वाली या आश्रय देनेवाली, जगत्प्रसिद्ध उन लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता हूँ। हे लक्ष्मी ! तुम्हारी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो, अतः इसका मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ ॥५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या ऽअलक्ष्मीः ॥६॥

अन्वयः- हे आदित्यवर्णे ! तव, तपसः, वनस्पतिः, अथ, बिल्वः, वृक्षः, अधिजातः, तस्य, फलानि, तपसा, याः, अन्तराः, याः, च, बाह्याः, अलक्ष्मीः, नुदन्तु ।

भावार्थः- हे सूर्य के सदृश कान्तिवाली ! आपके तेज से वनस्पति विना पुष्प के फल देने वाला एक वृक्ष-विशेष उत्पन्न हुआ । तदनन्तर आपके हाथ से बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ । उस बिल्ववृक्ष का फल मेरे भीतर - बाहर की दरिद्रता को दूर करे ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥

अन्वयः- देवसखः, मणिना, सह, कीर्तिश्च, माम् उपैतु, अस्मिन्, राष्ट्रे, प्रादुर्भूतः अस्मि, कीर्तिम्, ऋद्धिम् मे, ददातु।

भावार्थः- हे लक्ष्मी ! देवसख अर्थात् श्रीमहादेव के सखा कुबेर या इन्द्रादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्नि की उपासना करूँ । एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के साथ, कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला या यश मुझे प्राप्त हो (सारांश यह है कि धन और यश दोनों ही मुझे मिले) मैं इस भारतवर्ष में उत्पन्न हुआ हूँ, अतः हे कुबेरदेव ! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें ।।७।।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।।८।।

अन्वयः- क्षुत्पिपासामलाम्, ज्येष्ठाम्, अलक्ष्मीम्, अहम्, नाशयामि, (हे लक्ष्मि !) मे गृहात्, सर्वान्, अभूतिम्, असमृद्धि च निर्णुद ।

भावार्थः- भूख तथा प्यासरूपी मल को धारण करने वाली एवं लक्ष्मीजी को ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ । हे लक्ष्मि ! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के सभी प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें ।।८।।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ।।९।।

अन्वयः- गन्धद्वाराम्, दुराधर्षाम्, नित्यपुष्टाम्, करीषिणीम्, सर्वभूतानाम्, ईश्वरीम्, ताम्, श्रियम्, इह उपह्वये ।

भावार्थः- सुगन्धित पुष्प के अर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी दबाने योग्य नहीं, धन-धान्यदि से सदा परिपूर्ण, गौ - अश्व आदि पशुओं की समृद्धि को देने वाली, समस्त प्राणियों की स्वीमिनी तथा जगत्प्रस्द्धि लक्ष्मी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ ।।९।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।।

अन्वयः- (हे श्रीः ! तव प्रभवेण) मनसः, कामम्, आकूतिम्, वाचः, सत्यम्, पशूनाम्, अन्नस्य (च)रूपम्, अशीमहि, श्रीः (च) मयि श्रयताम् ।

भाषार्थः- हे लक्ष्मी ! मैं तुम्हारे प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं संकल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव, वोहि आदि अन्नों के रूप अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य, चतुर्विध भोज्यपदार्थों इन समस्त पदार्थों को प्राप्त करूँ । सम्पत्ति - यश मुझमें आश्रय लेवें अर्थात् मैं धनवान् - कीर्तिमान् बनूँ ॥१०॥

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

अन्वयः- कर्दमेन, प्रजाभूता (श्रीः), कर्दम ! मयि, सम्भव, पद्ममालिनीम्, मातरम्, श्रियम् मे कुले वासय ।

भाषार्थः- 'कर्दम' नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई है । हे कर्दम ! आप मुझमें अच्छी तरह वास करें, इतनी ही प्रार्थना नहीं है अपितु कमल की माला धारण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराओ ॥११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

अन्वयः- आपः स्निग्धानि, सृजन्तु हे चिक्लीत ! (त्वम्) मे, गृहे, वस च, देवीम्, मातरम् श्रियम्, मे कुले, निवासय ।

भाषार्थः- जिस प्रकार कर्दम की सन्तति 'ख्याति' से लक्ष्मी का अवतार हुआ है, उसी प्रकार अन्य कल्प में भी समुद्र से लक्ष्मी का आनिभवि हुआ है (श्रीमद्भागवत् में कथा आई है-समुद्र में मन्थन करने से चौदह रत्न निकले हैं, जिनमें लक्ष्मी का आर्विभाव भी शामिल है) । इसी अभिप्राय से यहाँ कहा जाता है कि- जलदेवता स्निग्ध अर्थात् मनोहर

पदार्थों को उत्पन्न करें (पदाथा में सुन्दरता ही लक्ष्मी हैं)। लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत–ये चार पुत्र हैं। इनमें यहाँ चिक्लीत से प्रार्थना की जाती है कि–हे लक्ष्मीपुत्र चिक्लीत ! तुम मेरे गृह में निवास करो। केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥१३॥

अन्वयः– हे जातवेदः ! (त्वम्) मे (गृहे), आर्द्राम्, पुष्करिणीम्, पुष्टिम्, पिङ्गलाम्, पद्ममालिनीम्, चन्द्राम्, हिरण्मयीम्, लक्ष्मीम्, आवह।

भावार्थः– हे जातवेदा अग्ने ! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् हाथियों के शुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना, आर्द्र शरीरवाली, पुष्टि को देने वाली अथवा पुष्टिस्वरूपा रक्त और पीतवर्ण वाली, कमल की माला धारण कर जगत् को प्रकाशित करने वाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ ॥१३॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १४॥

अन्वयः– हे जातवेदः। (त्वम्) मे (गृहे) आर्द्राम्, यः, करिणीम्, यष्टिम्, सुवर्णाम्, हेममालिनीम्, सूर्याम्, हिरण्मयीम्, आवह।

भावार्थः– हे जातवेदा अग्ने ! आप मेरे घर में भक्तों पर सर्वदा दयार्द्रचित्त अथवा समस्त भुवन जिनकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देने वाली अथवा यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुन्दर वर्णवाली **'धातूनामस्मि काञ्चनम्'** इस वचन के अनुसार सुवर्णस्वरूपा एवं सुवर्ण की माला धारण करने वाली सूर्यज्वा अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और

वृष्टि द्वारा जगत् का पालन–पोषण करता है उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा जगत् का पालन–पोषण करती हैं, अतः प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ ॥१४॥

तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

अन्वयः– हे जातवेदः ! (त्वम्) मे, (गृहे) ताम्, अनपगामिनीम्, लक्ष्मीम्, आवह, यस्याम्, हिरण्यम्, प्रभूतिम्, गावो (गाः) दास्यः (दासीः) अश्वान्, पुरुषान्, अहम्, विन्देयम् ।

भाषार्थः– हे जातवेदा अग्ने ! आप मेरे यहाँ उन जद्विख्यात लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र कहीं न जाने वाली हों, उन लक्ष्मी को बुलाओ । जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े और पुत्र–पौत्रादि को प्राप्त करूँ अर्थात् अचला लक्ष्मी को प्राप्त करूँ ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

अन्वयः– यः, श्रीकामः, (सः) शुचिः, प्रयतः, भूत्वा, अन्वहम्, आज्यम्, जुहुयात्, सूक्तं, पञ्चदशर्चं, च, सततम्, जपेत् ।

भाषार्थः– जो मनुष्य लक्ष्मी प्राप्ति की कामना करता हो वह श्रद्धा–भक्तिपूर्वक पवित्र और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ के घृत का होम और उसके साथ लक्ष्मी–सूक्त की पूर्वोक्त पन्द्रह ऋचाओं का जप निरन्तर करे ॥१६॥

इति सान्वयं हिन्दीटीकासहितं श्रीसूक्तम् ।

○

रुद्रयामलोक्त श्रीसूक्तस्य सम्पुटपुरश्चरणविधिः (१)

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥१॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
ॐ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥२॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् । श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥३॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तांतर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम्।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥४॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
ॐ चन्द्रांप्रभासां यशसाज्वलन्तीं श्रियंलोकेदेवजुष्टामुदाराम्।
तांपद्मनीमीं शरणमहंप्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतांत्वांवृणोमि ॥
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥५॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
ॐ आदित्यवर्णेतपसोऽधिजातोवनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
तस्यफलानि तपसानुदन्तुमायान्तरायाश्चबाह्या अलक्ष्मीः ॥
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥६॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचिता ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥७॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥८॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥९॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥१०॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥११॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।
ॐ श्री ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥१२॥
ॐ श्री ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥१३॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥१४॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
ॐ तां मऽआवह जातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यांहिरण्यं प्रभूतंगावो दास्योऽश्वान्विन्देयंपुरुषानहम्।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥१५॥
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
ॐ यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।
ॐ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।
ॐ श्री ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥१६॥

इति रुद्रयामलोक्त श्रीसूक्तस्य सम्पुट पुरश्चरणविधिः (१)।

श्री सूक्तस्य स्पुटपुरश्चरणविधिः (२)

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा॥ १॥

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा।

ॐ तां मआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम।

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा॥ २॥

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥ ३॥
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।
ॐ काँ सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम् ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥ ४॥
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमीं शरणं प्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वांवृणे ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥ ५॥
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
तस्यफलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा॥ ६॥
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा।
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिनासह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा॥७॥
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा।
ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा॥८॥
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं

नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥ ९॥
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥१०॥
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।
ॐ कर्दमेनप्रजा भूता मयिसम्भवकर्दम ।
श्रियंवासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥११॥

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥१२॥
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥ १३॥
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं में देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।
ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह ।
ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं

नाशय नाशय प्रचुरं धनं मे देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।। १४॥

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं मे देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।

ॐ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं मे देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥ १५॥

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं मे देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ।

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिनी महालक्ष्मी मम दारिद्र्यं
नाशय नाशय प्रचुरं धनं मे देहि-देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥ १६॥

इति श्री श्रीसूक्तस्यसम्पुटपुरश्चरणंविधिः (२)।

लक्ष्मीसूक्तम्

संकल्पः- आचम्यप्राणानायम्य । देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (वर्मा, गप्तः, दासो वा) मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य नित्यकल्याणप्राप्त्यर्थमलक्ष्मी-विनाशपूर्वक-मनोऽभिलषित-विपुललक्ष्मीप्राप्त्यर्थं सर्वदा मम गृहे लक्ष्मीनिवासार्थं च श्रीमहालक्ष्मीदेव्याः प्रीत्यर्थं लक्ष्मीसूक्तपाठमहं करिष्ये ।

ध्यानम् - सिन्दूरारुण-कान्तिमब्ज-वसतिं सौन्दर्य-वारां-निधिं
कोटिराङ्गद-हार - कुण्डल-कटी-सूत्रादिभिर्भुषिताम् ।
हस्ताब्जै-र्वसु-पात्रमब्ज-युगलादर्शो वहन्तीं पराम्
आवीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत् प्रिय शार्ङ्गिणः ॥

पद्मानने पद्मिनि पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥१॥

पद्मानने पद्म ऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥२॥

अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि ! सर्वकामांश्च देहि मे ॥३॥

पुत्र-पौत्रं धनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरीरथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥४॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना ॥५॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं वदातु सोमिनः ॥६॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाऽशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्त-जापिनाम् ॥७॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक-गन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥८॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥९॥
महालक्ष्मै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥१०॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।

ऋषयश्च श्रियः पुत्रा मयि श्रीर्देवि देवता ॥११॥
ऋणु - रोगादि - दारिंद्र्य - पापक्षुदपमृत्यवः।
भय-शोक-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥१२॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते ।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥१३॥

इति श्रीलक्ष्मी सूक्तंम् ।

O

लक्ष्मीसूक्तम्

पद्मानने पद्मिनि पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥१॥

हे कमलमुखि ! हे कमलिनि ! हे कमलपत्रोंवाली ! हे कमल प्रेमी ! हे कमल सदृश बड़े-बड़े नेत्रोंवाली ! संसार के अनुरुप, हे महालक्ष्मी ! तुम अपने चरणकमलों सहित मेरे घर में निवास करो ॥१॥

पद्मानने पद्म ऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥२॥

हे कमलवत् मुखवाली ! हे कमल सदृश ऊरुवाली ! हे कमलनयनि ! हे कमलवासिनी ! हे पद्माक्षी ! आप मेरे यहाँ सदैव निवास करो, जिससे मुझे सौख्य मिलता रहे ॥२॥

अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि ! सर्वकामांश्च देहि मे ॥३॥

हे अश्वों को देनेवाली, गायों को देनेवाली, धन देनेवाली, महाधने लक्ष्मी ! धन ऐश्वर्य देकर सभी कामनाओं की पूर्ति करती रहो ॥३॥

पुत्र-पौत्रं धनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरीरथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥४॥

ह माता ! पुत्र-पौत्र, धन-धान्य, हाथी, अश्व, गौ-घोड़े सहित जुते रथ प्रजाओं को प्रदान करो और मुझे आयुष्मान् करो ॥४॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना ॥५॥

हे अग्निदेव ! धन दें ! हे वायुदेव ! धन दें ! हे सूर्यदेव ! धन दे, हे वासुदेव ! धन दें । हे इन्द्रदेव ! धन दें । हे बृहस्पति, वरुण एवं अश्विनी कुमारों ! धन दें ॥५॥

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥६॥

हे गरुड़ ! हे इन्द्रदेव ! आप सभी सोमरसपान करें । कुबेर आदि सभी देव मुझे सोमरस प्रदान करें । हे सोमरसपान करने वाले, सदा-सर्वदा हमारे घर में निवास करें । जिससे मैं ऐश्वर्यवान् बन सकूँ ॥६॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाऽशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्त-जापिनाम् ॥७॥

आपका पाठ करने वालों को क्रोध,मत्सरता, लोभ एवं अशुभ विचार कभी भी उत्पन्न नहीं होते हैं। सर्वदा पुण्य करने तथा भक्ति की ओर सर्वदा मन लगा रहता है ॥७॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक-गन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥८॥

हे कमलवासिनी ! कमलवत् करों वाली ! हे स्वच्छ सुगन्धित पुष्पों की माला धारण करनेवाली शोभायमान ! हे विष्णुप्रिये ! मन की बातों को जाननेवाली, त्रैलोक्य को ऐश्वर्य प्रदान करनेवाली ! धन देनेवाली हे देवी ! मेरे ऊपर प्रसन्न होकर वास करो ॥८॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥९॥

मैं विष्णुपत्नि, क्षमारूपिणी, माधवी, विष्णुप्रिया, माधवप्रिया, सखी अच्युतवल्लभा, देवी को प्रणाम करता हूँ ॥९॥

महालक्ष्मै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥१०॥

मै महालक्ष्मी की जिज्ञासा करता हूँ। विष्णुपत्नि का ध्यान करता हूँ। अतएव श्रीमहालक्ष्मी हमें प्रेरित करें, हमारे घर में सदा-सर्वदा निवास करें ॥१०॥

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयश्च श्रियः पुत्रा मयि श्रीर्देवि देवता ॥११॥

आनन्द, कर्दम, श्रीत, चिक्लींत ये चार जो आपके प्रसिद्ध पुत्र हैं, और इस श्रीसूक्त के ऋषि भी हैं। इस सूक्त के प्रधान देवता भी लक्ष्मी के पुत्र ही हैं, मुझे भी धन दें ॥११॥

ऋण-रोगादि-दारिद्र्य - पापक्षुदपमृत्यवः ।
भय-शोक-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥१२॥

हे महालक्ष्मी ! मुझे-ऋण-क्लीबरोगादिबाधाएँ, दरिद्रता, पाप, अकालमृत्यु, भय-शोक एवं समस्त मन:तापो से कभी भी क्लेश न उत्पन्न हों और मैं सर्वदा सुखी रहूँ ॥१२॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते ।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥१३॥

इस सूक्त के पाठ करने से लक्ष्मी, तेज, आयु, आरोग्य, पवित्रता, गौरव वृद्धि एवं सभी वस्तुएँ प्राप्त होती है धन-धान्य, पशु, बहुपुत्र लाभ एवं सौ वर्षों तक की आयु प्राप्त होती है ॥१३॥

प्रार्थना- ॐ सुरा-सुरेन्द्रादि-किरीटमौक्तिकैः युक्तं सदा यत्तव पादपङ्कजम् ।
परावरं पातु वरं सुमङ्गलं नमामि भक्त्या तव कामसिद्धयै ॥
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी ।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मीः नमोऽस्तुते ॥

इति हिन्दी टीका सहितं लक्ष्मीसूक्तम् ।

○

पुरुष सूक्तम्

सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
स भूमिं सर्वतः स्पृत्त्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुष ऽएवेदं सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्ष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि ॥४॥
ततो विराडजायत विराजो ऽअधि पूरुषः ।
स जातो ऽअत्यरिच्च्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥

तस्माद्य ज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्जयम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्व्यानारण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च ये ॥६॥
तस्म्माद्य ज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांꣳसि जज्ञिरे तस्म्माद्यजुस्तस्म्मादजायत ॥७॥
तस्म्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादत ।
गावो ह जज्ञिरे तस्म्मात्तस्म्माज्जाता ऽअजावयः ॥८॥
तं य्यज्ञं बर्हिषि प्प्रौक्षन्नपुरुषं जातमग्ग्रतः ।
तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये ॥९॥
यत्पुरुषं व्व्यदधुः कतिधा व्व्यकल्प्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत्त्किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्चयेते ॥१०॥
ब्ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्न्यः कृतः ।

ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬ शूद्रो ऽअजायत ॥११॥

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत ।

श्श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥

नाभ्या आसीदन्तरिक्षᳬ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२॥ अकल्प्पयन् ॥१३॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।

व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः ॥१४॥

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥१५॥

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥

इति पुरुष सूक्तम्

पुरुषसूक्तम्

हिन्दीटीकासहितम्

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।

स भूमिꣳ सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥

वह सर्व प्राणि समष्टिरूप परम पुरुष श्री महानारायण एवं ब्रह्माण्ड देह होने से अनन्त शिर, अनंन्त नेत्र, अनन्त हस्त–पादादि वाले हैं, सभी प्राणियों के शिर, पादादि अवयव श्रीमन्नारायण के देहान्तः पाति होने से उन्हीं के हैं, अतः वह सत्य में ही 'सहस्रशीर्षा' आदि स्तुति का भाजन है, वही विराट् पुरुष अनन्तकोटि ब्रह्माण्डरूप भूमि को ऊपर–नीचे, दायें–बायें सब ओर से व्याप्त करके जीव के दशाङ्गुल हृदय–प्रदेश में अन्तर्यामितया स्थित हो गया । अथवा दशों इन्द्रियों को अपने वश में करके स्थित हो गया ॥१॥

पुरुष ऽएवेदꣳ सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।

उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥

इस सृष्टि में वर्तमान, भूत तथा भविष्यकाल में रहनेवाला सारा जगत् उसी विराट् पुरुष परब्रह्म परमात्मा का अवयव है । वही काल–कर्मवश अपनी कारणावस्था को त्यागकर अन्न एवं फलरूप से जगत् की अवस्था को प्राप्त होता है और वही अमृतत्वरूप मोक्ष का स्वामी है, इसलिए वह अमर भी है, इतना ही नहीं, जीवमात्र जिस अन्न से जीवित रहता है उस अन्न का स्वामी भी वही पुरुष है ॥२॥

एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽय व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥

यह सब भूत, भविष्य एवं वर्तमान काल से सम्बन्धित जो अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड दिखाई पड़ता है , वह सभी इस विराट् प्रभु की विभूति का चतुर्थांश(पाद मात्र) है । उस महानारायण की इतनी ही महिमा नहीं है, वह आदि पुरुष तो इससे भी अधिक शक्तिशाली है । उस अचिन्त्य शक्ति प्रभु के महैश्वर्य के तीन भाग तो वैकुण्ठ धाम में विराज रहे हैं, अर्थात् वह महानारायण अपनी अचिन्त्य अपरिमय शक्ति के चतुर्थांश से ही इस सृष्टिचक्र का सञ्चालन करता है, उसके शेष तीन भाग तो दिव्यधाम में ही समाये हुए हैं ।।३।।

त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्ये हाभवत्पुनः।
ततो व्विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि ॥४॥

संसार स्पर्श रहित वह त्रिपाद परब्रह्म अज्ञानमूलक इस जगत्प्रपञ्च से बहिर्भूत अर्थात् सके गुणदोष वर्जित होकर स्थित हुआ । उसी ब्रह्म के लेशमात्र (एक पाद से) माया द्वारा जगत् की सृष्टि, स्थिति तथा प्रलय होता रहा । वह माया द्वारा भूत ग्राम चतुर्विध अनेक योनियों में पशु, पक्षी आदि विविधरूप धारण कर भोजन आदि व्यवहारों से युक्त चेतन एवं नदी, पर्वत आदि स्थावर अनेक रूपों में दिखी पड़ता है ।।४।।

ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः।
स जातो ऽअत्यरिच्च्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥

त्रिपादूर्ध्व-ष्विङ् व्यक्रामत् से जिसकी अभिव्यक्ति होती है, उसी का सप्रपञ्चात्मक वर्णन ततो विराडजायत इस

मन्त्र में किया गया है। तदनन्तर उस आदिपुरुष से विराट (ब्रह्माण्ड) देह की उत्पत्ति हुई। तदनन्तर विराट् शरीर को अधिकृत कर तत्तद्देहाभिमानी वह परम पुरुष प्राणी मात्र के स्वरूप में आत्मा बनकर विराजमान हुआ। पुनः वही विराट् पुरुष अन्यान्य देवता, तिर्यक्, पशु–पक्षी एवं मनुष्यादि के रूप में जीवसंज्ञा को प्राप्त हुआ। उसके बाद उसने भूमि उत्पन्न कर समस्त विश्व की रचना की ॥५॥

तस्माद्य ज्ञात्त्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्जयम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्वयानारण्ण्या ग्ग्राम्भ्याश्च्च ये ॥६॥

तत्पश्चात् उस सर्वात्मा पुरुष ने सर्वहुताख्य यज्ञ के निमित्त दधिमिश्रित नवनीत उत्पन्न किया। उसके बाद उसने वायु–देवतात्मक हरिण, पशु–पक्षी आदि आरण्यक जीवों की, तत्पश्चात् गाय, अश्वादि ग्राम्य जीवों की सृष्टि की ॥६॥

तस्म्माद्य ज्ञात्त्सर्व्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्म्माद्यजुस्तस्म्मादजायत ॥७॥

जिसमें अपनी सम्पूर्ण प्रिय वस्तुएँ अथवा सम्पूर्ण अहङ्कारादि असद्वृत्तियों की आहुति दी जाती है ऐसे उस सर्वहुत यज्ञ के निमित्त ऋक् एवं सामदेव उत्पन्न हुए। साथ ही उस सर्वहुत यज्ञ के निमित्त अनेक प्रकार के वैदिक गायत्री आदि छन्द तथा गद्यात्मक मन्त्र बहल यजुर्वेद का प्रादुर्भाव हुआ। क्योंकि मन्त्रों के बिना यज्ञ सम्पन्न नहीं किया जा सकता॥७॥

तस्म्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादत ।
गावो ह जज्ञिरे तस्म्मात्तस्म्माज्जाता ऽअजावय ॥८॥

उसी यज्ञ से अश्व की उत्पत्ति हुई, पुनः नीचे–ऊपर दोनों ओर दाँत वाले (गर्दभ), अश्वतर (खच्चर) एवं गाय,

भेड़, बकरी आदि पशु क्रमशः उत्पन्न हुए। क्योंकि, पशुओं के बिना यज्ञ सम्पन्न नही किया जा सकता। इस प्रकार सृष्टि का क्रमिक विकास हुआ ॥८॥

तं य्यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्नपुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा ऽअयजन्त साध्य ऽऋषयश्च ये ॥९॥

सर्वप्रथम आविर्भूत उस पुरुष को, जो यज्ञ-यूप में बँधे हुए पशु के तुल्य थे, सृष्टि से पूर्व प्रकटित प्रजापति, साध्य देवता एवं अन्य मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने उससे प्रोक्षणादि संस्कारों द्वारा तदनुकूल (समयानुसार) मानस यज्ञ सम्पन्न किया। अर्थात् इन्द्रादि साध्य एवं ऋषियों ने प्रणवाधिष्ठित पुरुष से आत्मयज्ञ सम्पन्न किया ॥९॥

यत्पुरुषं व्वयदधुः कतिधा व्व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमरू पादाऽउच्यते ॥१०॥

उस समय विराट् के प्राणस्वरूप प्रजापति देवता एवं साध्यगण उस विराट् पुरुष को अपने सत्संकल्प द्वारा उत्पन्न होते देख अति प्रसन्न हुए। अतः यहाँ प्रश्नोत्तर द्वारा परमात्मा के मुखादि अङ्गों का निरुपण करते हुए कहा-उस विराट् पुरुष का मुख क्या था ? भुजा क्या थी तथा ऊरु एवं पैर क्या थे ? ॥१०॥

ब्ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या शूद्रो ऽअजायत ॥११॥

उस विराट् पुरुष का ब्रह्मत्व जाति विशिष्ट ब्राह्मण मुख हुआ, क्षत्रियत्व जातिविशिष्ट क्षत्रिय बाहु हुआ। वैश्यत्व जातिविशिष्ट वैश्य जङ्घा या पेट हुआ उसके पैर से शूद्रत्व जाति विशिष्ट शूद्र की उत्पत्ति हुई ॥११॥

(**विशेष-** जीव-जगत् की स्थिति के लिए ज्ञान,बल,धन तथा क्रिया (सेवा) की आवश्यकता थी, अतः उन चारों प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु क्रमशः ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र की उत्पत्ति यज्ञपुरुष के मुख भुजा, जङ्घा तथा चरण से हुई । यज्ञ के लिए भी इन्ही चारों वस्तुओं की आवश्यकता होती है, अतः उनके प्रतीक भूत चारों वर्णों की उत्पत्ति का इस मन्त्र में वर्णन है ।)

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत ।
श्श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥

उसी प्रकार उस विराट पुरुष के मन से चन्द्रमा, नेत्र से सूर्य, श्रोत समीपवर्त्ती घ्राण से वायु एवं प्राण तथा मुख से अग्निदेव उत्पन्न हुए ॥१२॥

(**विशेष-** इस मन्त्र में श्रोत्र का तात्पर्य श्रोत्रेन्द्रिय समीपवर्ती घ्राणेन्द्रिय से है, क्योंकि आगे के मन्त्र में पुनः श्रोत्र शब्द आया है । जिस प्रकार उस यज्ञ पुरुष से दधि आदि द्रव्य, गवादि पशु, अनादि वेद एवं ब्राह्मणादि मनुष्य उत्पन्न हुए, उसी प्रकार उस यज्ञपुरुष से चन्द्रमादि ज्योतियों की उत्पत्ति का वर्णन इस मन्त्र में किया गया है ।)

नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२॥ अकल्प्पयन् ॥१३॥

उस विराट पुरुष की नाभि से आकाश,मस्तक से द्युलोक (स्वर्ग), श्रोत्र से दिशाएँ तथा पैरों से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई । इस प्रकार समस्त भूतात्मक जीव युक्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति विराट् द्वारा हुई ॥१३॥

यत्पुरुषेण हविषां देवा यज्ञमतन्वत ।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यं ग्रीष्म्म ऽइध्मः शरद्धविः ॥१४॥

जिस समय देवताओं ने अगली सृष्टि के लिए बाह्य द्रव्यों के अभाव में पुरुषस्वरुप हो अपने मन से मानसिक यज्ञ की कल्पना की, उस समय उस यज्ञ का वसन्त ऋतु आज्य (घृत), ग्रीष्मऋतु समिधा तथा शरद् ऋतु ही हवि (पुरोडाश) स्थान पर स्थित थे ॥१४॥

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रि सप्प्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥१५॥

उस मानसिक यज्ञ-वेदी के गायत्री आदि सातो छन्द तथा सात समुद्र परिधि (मेखला) के रूप में थे। और पृथ्वी आदि पञ्च महाभूत, पाँच तन्मात्राएँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और एक मन ये इक्कीस समिधाएँ थी। यह यज्ञ तब हुआ जब मानस-यज्ञ की इच्छा करने वाले साध्यादि देवों ने पशुरुप पुरुष को दीक्षा के नियमों में बाँधा ॥१५॥

(**विशेष-** प्रस्तुत मन्त्र में जब देवताओं ने प्रजापति प्राणेन्द्रियरूप यज्ञ का विस्तार करते हुए मानसयज्ञ करना प्रारम्भ किया, तो उसमें उन लोगों ने विराटपुरुष को ही पशु रूप में भावना की, इसी अभिप्राय से चौदहवें मन्त्र में **यत्पुरुषेण हविषा** कहा गया है। उस समय संकल्पित मानस यज्ञ की गायत्री इत्यादि सात छन्द, यज्ञवेदी के परिधि माने गये। यह यज्ञ भारतवर्ष में सम्पन्न किया गया, इसलिए क्षीर-समुद्र इसके परिधि के रूप में कहा गया, अथवा आत्मयोग में पृथ्वी,अप्, तेज, वायु, आकाश, मन एवं बुद्धि ये सात परिधियाँ कही गयी। पृथ्व्यादि पञ्चमहाभूत, पञ्चतन्मात्राएँ, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ एवं मन ये इक्कीस उस आत्मयज्ञ की समिधाएँ कही गयी है।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवा ॥१६॥

प्रजापति प्राणस्वरुप देवताओं ने तथोक्त यज्ञों द्वारा विराट् पुरुष को सन्तुष्ट किया, तब से ही नारायण साक्षात् धर्म

स्वरुप माने गये हैं, इसलिए साधक स्वर्गप्राप्ति के निमित्त यज्ञ करें। क्योंकि उसी पुरातन विराट्पुरुष की प्राप्ति के लिए समस्त सिद्ध एवं योगीजन निरन्तर तत्पर रहते है। उन्ही श्रीमन्नारायण के धाम में तभी से आदि सृष्टिकालीन साध्यगण दिव्य शरीर धारण कर निवास करते हैं और नारायणोपासक महात्मालोग भी दुःखलेश वर्जित वैकुण्ठ धाम का सेवन करते हैं ॥१६॥

इस प्रकार पुरुषसूक्त की टीका समाप्त।

○

ऋणमोचनमंगलस्तोत्रम्

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकामविरोधकः ॥१॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूमिदो भूमिनन्दनः ॥२॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः ॥३॥

एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत् ।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥४॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥५॥
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत्पठनीयं सदा नृभिः ।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पापि भवति क्वचित् ॥६॥
अङ्गारक महाभाग भगवन् भक्तवत्सल ।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय ॥७॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यं ये चान्ये चापमृत्यवः ।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥८॥
अतिवक्रदुराराध्य भोगमुक्तिजितात्मनः ।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥९॥
विरिञ्चिशक्रविष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा ।

तेन त्वं सर्वसत्त्वेन महराजो महाबलः ॥१०॥
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः ।
ऋणदारिद्र्य दुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः ॥११॥
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम् ।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ॥१२॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे भार्गवप्रोक्तं ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रम् ।

O

ऋणमुक्ति एवं लक्ष्मी प्राप्ति के कुछ विविध प्रयोग

१. अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम ।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम ॥

इस मन्त्रका कम से कम सवा लक्षा जप करने से ऋणमुक्ति हो जाती है अथवा इस मन्त्र का सम्पुट देकर दुर्गासप्तशती की शतचण्डी कराने से ऋण दूर हो जाता है ।

२. कुशकी जड़, बिल्वका पञ्चाङ्ग (पत्र, फल, बीज, लकड़ी और जड़) और सिन्दूर इन सबका चूर्ण बनाकर चन्दन की पीठिका पर निम्नलिखित मन्त्र को लिखे –

ॐ आं ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नमः ममालक्ष्मीं नाशय नाशय मामृणोत्तीर्णं कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय स्वाहा ।

पश्चात् पञ्चोपचार से पूजन करके गोघृतके द्वारा ४४ दिन तक प्रतिदिन सात बार हवन करे । मन्त्र की जप संख्या कम से कम दस हजार है, जो ४४ दिनमें पूरी होनी चाहिये । ४३ दिन तक प्रतिदिन २२८ मन्त्र का जप होना चाहिये और ४४ वें दिन १९६ मन्त्र का जप होना चाहिये । अनन्तर १००० मन्त्र का जप दशांश के रूप में करना चाहिये ।

३. ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट् ।

इस ऋणहर्ता गणेश-मन्त्र का एक वर्ष तक लगातार ग्यारह सौ बार जप करना चाहिये ।

४. काशी में महामृत्युञ्जय मन्दिर (मध्यमेश्वर गली) के पास वहुत ही प्राचीन और प्रत्यक्ष फ़लप्रद 'ऋणहरेश्वर मन्दिर' है । इनका सवा वर्ष तक प्रतिदिन दर्शन करने से और इनके सामने ऋणहर्ता गणेशस्तोत्रका प्रतिदिन ११ बार पाठ करने से निश्चित ही ऋण से मुक्ति हो जाती है ।

५. वाराणस्यामुत्तरे तु सुमन्तुर्नाम वै द्विजः ।
तस्य स्मरणमात्रेण निर्धनो धनवान् भवेत् ॥

इस मन्त्र का प्रतिदिन ११ माला जप कम से कम १ वर्ष तक करना चाहिये ।

६. कुवेर त्वं धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता ।
तां देवीं प्रेषयाशु त्वं मद्गृहे ते नमो नमः ॥

इस मन्त्र का प्रतिदिन ११ माला जप करना चाहिये । ढाई लाख जप पूर्ण होने पर कमल का पुष्प, श्वेतदूर्वा, गूगल, गोघृत-इन सब चीजों को मिलाकर दशांश हवन करने से लक्ष्मी की विशेष प्राप्ति होती है ।

७. ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा ।

इस मन्त्र से वाल्मीकिरामायण के उत्तरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति अग्नि में देनी चाहिये । अनन्तर सर्ग की समाप्ति पर निम्नलिखित मन्त्र का पाठ करना चाहिये ।

ॐ रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।
भो दशास्यान्तकास्माकं रक्षां देहि श्रियं च ते ॥

८. ॐ श्रीं श्रियै नमः मह्यं श्रियं देहि देहि दापय दापय स्वाहा ।

इस मन्त्र से वाल्मीकिरामायणसुन्दरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति देनी चाहिये इस अनुष्ठान का प्रारम्भ दीवाली की रात्रि में दीपक जल जाने के बाद प्रारम्भ करना चाहिये ।

इस अनुष्ठान की विधि इस प्रकार है आठ दिनों तक प्रतिदिन वाल्मीकिरामायण के सात सर्ग का और नवें दिन बारह सर्ग का पाठ करके नवें दिन पाठ पूरा करना चाहिये । अथवा गुरु एवं आचार्य के परामर्श से करना चाहिए ।

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रियै नमो भगवति मम समृद्धौ ज्वल ज्वल मां सर्वसम्पदं देहि देहि ममालक्ष्मीं नाशय नाशय हुँ फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र का सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण अथवा दीपावली की रात्रि में १००८ बार जप कर, घृत की आहुति देनी चाहिये । ऐसा करने से मनुष्य की दरिद्रता दूर हो जाती है और वह अत्यन्त लक्ष्मीवान् हो जाता है ।

१०. ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा ।

इस मन्त्र का ११०० बार जप लगातार तीन वर्ष करने से विशेष लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

ऋणहर्तागणेशस्तोत्रम्

कैलाशपर्वते रम्ये शम्भुँ चन्द्रार्धशेखरम् ।
षडाम्नायसमायुक्तं पप्रच्छ नगकन्यका ॥

पार्वत्युवाच देवेश परमेशान सर्वशास्त्रार्थपारग ।
उपायमृणनाशस्य कृपया वद साम्प्रतम् ॥

शिव उवाच सम्यक् पृष्टं त्वया भद्रेलोकानांहितकाम्यया ।
तत्सर्वं सम्प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ॥

विनियोग : ॐ अस्य श्रीऋणहर्त्ता गणपतिस्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीऋणहर्त्ता गणपतिर्देवता, ग्लों बीजम्, गः शक्ति, गों कीलकम् मम सकलऋणनाशने जपे विनियोगः।

मन्त्रः – ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुँ नमः फट्।

ऋष्यादिन्यास : ॐ सदाशिवऋषये नमः, शिरसि । अनुष्टुप् छन्द से नमः, मुखे । ॐ श्रीऋहर्त्तागणेशदेवतायै नमः, हृदि । ग्लों बीजाय नमः, गुह्ये (मूलाधारे) । गः शक्तये नमः, पादयोः । गों कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे ।

करन्यास : ॐ गणेश अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ऋणं छिन्धि तर्जनीभ्या नमः । वरेण्यम् मध्यमाभ्यां नमः । हुम् अनामिकाभ्या नमः। नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । फट् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास : ॐ गणेश हृदयाय नमः । ऋणं छिन्धि शिरसे स्वाहा । वरेण्यम् शिखायै वषट् । हुं कवचाय हुम् । नमः नेत्रत्रयाय वौषट् । फट अस्त्राय फट् ।

ध्यानम् सिन्दूरवर्णं द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम् ।
ब्रह्मादिदेवैः परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम् ।

स्तोत्रपाठः

सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फलसिद्धये ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥१॥
त्रिपुरस्य वधात्पूर्वं शम्भुना सम्यगर्चितः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥२॥
हिरण्यकश्यपादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ।३।
महिषस्य वधे देव्या गणनाथः प्रपूजितः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥४॥
तारकस्य वधात्पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥५॥

भास्करेण गणेशस्तु पूजितश्छविसिद्धये ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥६॥
शशिना कान्तिसिद्ध्यर्थं पूजितो गणनायकः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥७॥
पालनाय च तपसा विश्वामित्रेण पूजितः ।
सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥८॥
इदं त्वृणहरं स्तोत्रं तीव्रदारिद्र्यनाशनम् ।
एकवारं पठेन्नित्यं वर्षमेकं समाहितः ॥९॥
दारिद्र्यं दारुणं त्यक्त्वा कुबेरसमतां व्रजेत् ।
पठन्तोऽयं महामन्त्रः सार्धपञ्चदशाक्षरः ॥१०॥
अस्यैवायुतसंख्याभिः पुरश्चरणमीरितम् ।
सहस्रावर्तनात् सद्यो वाञ्छितं लभते फलम् ॥
भूत-प्रेत-पिशाचानां नाशनं स्मृतिमात्रतः ॥११॥

इति श्रीकृष्णयामलतन्त्रागत-उमामहेश्वरसंवादे ऋणहर्तागणेश स्तोत्रम् ।

ऋणमुक्ति गणेशस्तोत्रम् ।

विनियोगः- अस्य श्रीऋणमुक्तिमहागणपतिस्तोत्रमन्त्रस्य शुक्राचार्य ऋषिः, ऋणमुक्ति महागणपतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ स्मरामि देवदेवेशं वक्रतुण्डं महाबलम् ।
षडक्षरं कृपासिन्धुं नमामि ऋणमुक्तये ॥१॥
महागणपतिं वन्दे महासेतुं महाबलम् ।
एकमेवाद्वितीयं तु नमामि ऋणमुक्तये ॥२॥
एकाक्षरं त्वेकदन्तमेकं ब्रह्म सनातनम् ।
महाविघ्नहरं देवं नमामि ऋणमुक्तये ॥३॥
शुक्लाम्बरं शुक्लवर्णं शुक्लगन्धानुलेपनम् ।
सर्वशुक्लमयं देवं नमामि ऋण मुक्तये ॥४॥
रक्ताम्बरं रक्तवर्णं रक्तगन्धानुलेपनम् ।
रक्तपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये ॥५॥
कृष्णाम्बरं कृष्णवर्णं कृष्णगन्धानुलेपनम् ।
कृष्णयज्ञोपवीतं च नमामि ऋणमुक्तये ॥६॥
पीताम्बरं पीतवर्णं पीतगन्धानुलेपनम् ।

पीतपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये ॥७॥
सर्वात्मकं सर्ववर्णं सर्वगन्धानुलेपनम् ।
सर्वपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये ॥८॥
एतद् ऋणहरंस्तोत्रं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
षणमासाभ्यन्तरे तस्य ऋणच्छेदो न संशयः ॥९॥
सहस्त्रदशकं कृत्वा ऋण मुक्तो धनी भवेत् ।१०।

इति रुद्रयामले ऋणमुक्तिगणेशस्तोत्रम् ।

स्वर्णाकर्षणभैरवस्तोत्रम्

ब्रह्मा यस्य ऋषिः स्वयं निगदिंतश्छन्दोमतां त्रैष्टुभं
स्वर्णाकर्षणभैरवो हरिहरब्रह्मात्मको देवता ।
ह्रीं बींज सह शक्तिरित्यभिर्हितं तस्यैव तत्त्वात्मनः
स्तोत्रं ध्यानपुरस्सरं सहमनु ब्रूमो वयं प्रत्यहम् ॥१॥
मन्दारद्रुममूलराजिमहिते माणिक्यसिंहासने ।
दीप्यन्त्योदरभिन्नचम्पकरुचा देव्या कृता लिङ्गना ।
भक्तेभ्यः कररत्नपात्रभरितं स्वर्णं दधानोऽनिशम्

स्वर्णाकर्षणभैरवो विजयते स्वर्गापवर्गैकभूः ॥२॥
ॐ ऐं क्लां क्लीं क्लमिति व्याहरद्भ्यो भिक्षां स्वर्णं यः स्वयं सम्प्रयच्छेत् ।
कारुण्याब्धिः कल्पमूलाधिवासः स्वर्णाकर्षो भैरवो मेऽस्तु भूत्यै ॥३॥
ह्रां ह्रीं ह्रूं सः सन्ततं जापकानां कर्षन्तं प्राक् स्वर्णवृष्टिं समग्राम ।
अन्तःस्वान्तं कोटिसूर्यप्रकाशं स्वर्णाकर्षं भैरवं भावयामः ॥४॥
मरकतमणिपात्रे सम्भृतं स्वर्णपूरं कृपणतरजनेभ्योऽनारतं सम्प्रदात्रे
कुरु हृदयसपर्यां सेव्यमानाय नित्यं सुरनरभुजगेन्द्रैरापदुद्धारणाय ॥५॥
नमो यामलबद्धाय बद्धसूत्राधिवासिने ।
स्वर्णाकर्षणशीलाय साधकानां कृतात्मनाम् ॥६॥
लोकेश्वरायाम्बुरुहासनाद्यैः बहिर्मुखैरर्चितपादुकाय ।
दारिद्र्यनिर्मूलनकर्मदाय कारुण्यवारां निधये नमस्ते ॥७॥
दीनानाथ विपन्नरक्षणपरैराज्ञाप्रतीक्षापरैः
सिद्धैः साध्यगणैः सुरासुरनरैर्भक्तैः प्रपन्ना दिभिः ।
सानन्दाय समुल्लसद्दिनमणिप्रत्यर्द्धि तेजोजुषे
स्वर्णाकर्षणभैरवाय सततं कुर्मो नमस्यां वयम् ॥८॥

स्वर्णाकर्षिण्या स्वात्मदेव्याश्रिताय स्वैरारूढाय चार सिंहासनाय ।
कुर्मो नित्यं स्वर्णदात्रे सपर्यां मद्दारिद्र्यद्वेषिणे भैरवाय ॥९॥
सुवर्णदायाध्वरदीक्षिताय स्वतेजसा कान्तजगत्त्रयाय ।
औदार्यसम्पत्प्रवणाय नित्यमो श्रीमहाभैरव ते नमोऽस्तु ॥१०॥
चिन्तामणिस्पर्शनकामधेनु - मदाररम्यमणिमण्डपमध्यगाय ।
स्वर्णप्रदाननिरताय सदा सपर्यां कुर्मो वयं विकरणैः परिभैरवाय ॥११॥
मूले कल्पतरोः प्रभापरिगते भद्रासने संस्थितो
हस्ताम्भोरुहरत्नपात्रभरितैः कार्त्तस्वरैर्भास्वरैः ।
अर्थानामतिदुर्द्धतिं विरचयन्नुद्यद्दिनेशद्युतिः
स्वर्णाकर्षणभैरवो भवतु मे दारिद्र्यविद्रावणः ॥१२॥
स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रमयं स्तोत्रमन्वहं पठताम् ।
निधि-सिद्धिरससिद्धिः स्वर्णासिद्धौश्च जायते पुंसाम् ॥१३॥

इति रुद्रयामले आपदुद्धारे स्वर्णाकर्षण भैरवस्तोत्रम् ।

प्राप्ति स्थान

विश्वभारती संस्कृत संस्थान

(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय पूर्वी गेट के सामने)
जगतगंज, वाराणसी-221002
मो0-9450540135

मूल्य - १५.००